अध्ययन सामग्री !-

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातक II

प्रश्नपत्र - अनिवार्य पेपर (हिन्दी रचना)

सुमन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

'अरण्य सीता चरित'

मुख्य पंक्तियों की व्याख्या

Scanned with CamScanner

# उत्तर सीता चरित
## चतुर्थ सर्ग

व्याख्या :—

"आकाश पुरुष नारी धरती
जब पुरुष स्नेह बरसाता है
तब नारी के जीवन के मधुवन में
वसंत आ जाता है।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ सुप्रसिद्ध साहित्यकार कलानन्द सिंह केसरी के खण्डकाव्य 'उत्तर सीता चरित' के चतुर्थ सर्ग से ली गई हैं। कलानन्द सिंह केसरी ने इस काव्य के द्वारा अपमानित, निर्वासित और उपेक्षित सीता को अपनी तरफ से पर्याप्त प्रतिष्ठा व सम्मान दिया है।

यह प्रसंग यह है कि जब गंधफली के बहाने तापसी विरजा ने पुरुष सत्ता पर तीखा व्यंग्य किया है। विरजा पुरुष प्रकृति, व्यवहार पर प्रहार करती हुई कहती है कि चंचल स्वभाव, ढ़ंगी व छलिया होते हैं उनका प्यार छलावा है। तब सीता जवाब में ये पंक्तियाँ कहती हैं, वह कहती है ये उचित नहीं है पुरुष और नारी दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हैं, तापसी विरजे तुम क्या जानो पुरुष का साहचर्य। पुरुष और नारी का संबंध तो आकाश और धरती की तरह है। जैसे अम्बर धरती को तृप्त करता है और धरती पर मधुबन का सौन्दर्य छा जाता है, ठीक उसी तरह पुरुष का पवित्र प्यार पा कर नारी जीवन का मधुबन खिल उठता है। सचमुच में उसके जीवन में वसंत का मादक, मोहक और सुगंध से भरा परिवेश उपस्थित हो जाता है। विरजे पुरुष के बिना नारी और नारी के बिना पुरुष अधूरे हैं। जहाँ पुरुष-नारी के पवित्र प्यार भरा जीवन हो वहाँ हमेशा आनन्द छाया रहता है।

Scanned with CamScanner

यहाँ सीता के माध्यम से कवि ने नारी और पुरुष के मार्मिक संबंधों को परिभाषित किया है। पुरुष और नारी के शाश्वत संबंधों, ~~में~~ आकाश में उमड़ते - घुमड़ते बादलों की तरह है तो स्त्री धरती की तरह धीर, गंभीर।

इन पंक्तियों से सीता के मर्यादित और आदर्श चरित की झलक मिलती है। परित्यक्ता होकर भी वह पुरुष के प्रति अतिशय संवेदनशील और स्नेह प्यार से भरी ~~दि~~ दिखती है। कवि की भाषा-शैली सुन्दर कोमल कान्त पदावली से युक्त है।

ए/